वर्ष २१ अंक ३
जुलाई १९७८ [वार्षिक मूल्य १०)
एक प्रति १)

Scanned with CamScanner

❀ जयगुरुदेव ❀

अमर सन्देश

[सतगुरु की अखण्ड वाणी,
जीवन पथ की कहानी।
जीवन सुधारक वाणी,
जीवों की भव पार कहानी॥]

वर्ष	अंक
२१	३
जुलाई	सन् १९७८
आषाढ़	सं० २०३५

—❀—

प्राप्ति स्थान

व्यवस्थापक अमर सन्देश

२३ पाण्डेय बाजार

आजमगढ़ (उ० प्र०)

—❀—

प्रकाशक

चिरौली सन्त आश्रम

कृष्ण नगर

मथुरा

टेलीफोन नं०

—❀—

सम्पादक

विश्वनाथ प्रसाद अग्रवाल

—❀—

वार्षिक मूल्य

१०) रू०

एक प्रति का मूल्य १ रू०

अमर सन्देश के नियम

❀ अमर सन्देश हर माह की २६, २७ तारीख को प्रकाशित होता है जो पाठकों के पास माह की पहली तारीख या उसके पहले मिल जाता है।

❀ जिस माह की १० तारीख तक उस माह का अमर सन्देश न मिले तो अप्राप्ति की सूचना भेजें। सूचना ग्राहक संख्या तथा अपना पता सही और साफ जरूर लिखें। यह भी लिखें कि कौन सा अंक नहीं मिला। ऐसे लोगों को माह की २६ ता० तक अमर सन्देश भेजा जावा है।

❀ अमर सन्देश का नया वर्ष अब मई से आरम्भ होता है। जनवरी से नहीं। मगर आप किसी भी महीने से ग्राहक बन सकते हैं। इसलिए नये ग्राहक मनीआर्डर कूपन पर अवश्य साफ साफ लिखें कि वे किस मास से ग्राहक बनना चाहते हैं।

अमर सन्देश तथा अमर सन्देश की फाइलें पुस्तकों के साथ नहीं भेजी जा सकती क्योंकि अमर सन्देश रजिस्टर्ड पत्रिका है। उसका डाक का नियम अलग है अतः उसके लिए डाक खर्च प्रति फाइल दो रुपया अलग से भेजें। इस समय फाइल सब खतम हैं।

रुपये तथा पत्र भेजने का पता:-

व्यवस्थापक—
'अमर सन्देश'
२३, पाण्डे बाजार,
आजमगढ़ उ० प्र०

Scanned with CamScanner

स्वामी जी ने कहा

तीन बातें सदैव याद रक्खो:—

(१) किसी की निन्दा न करना न सुनना। निन्दा करने से उसके पाप के बोझे से तुम दब जाओगे।

(२) कम खाओ इससे आलस नहीं आयेगा शरीर तन्दुरुस्त तथा चुस्त और फुर्तीला रहेगा। साधन भजन ठीक बनेगा।

(३) गम खाओ अर्थात बर्दाश्त करो। कोई कुछ भी कहे उसे सहन कर लो।

वर्ष २१ अंक ३] जुलाई १९७८ वार्षिक मूल्य १० रु० [एक प्रति १ रु०

कोमल चित दया मन धारो

कोमल चित्त दया मन धारो ।
परमारथ का खोज लगाना ॥
इन्द्री थान विषय को त्यागो ।
सुरत शब्द में नित्त लगाना ॥
सार पदारथ गुरु से पाओ ।
चरन कमल में प्रीत बढ़ाना ॥
धारा अगम पकड़ सुर्त जोड़ो ।
इस सतसंग में सदा समाना ॥
चली सुरत नभ द्वारा झांका ।
अंडा तीन लोक दरसाना ।
परे जाय ब्रह्मांड समानी ।
सुन्न सरोवर कँवल खिलाना ॥
अब तो काज कला सब हारा ।
मानसरोवर बैठ अन्हाना ॥
अक्षर रूप निरखती चाली ।
छोड़ दिया अब देश बिगाना ॥
सूरत साफ खड़ी ऊँचे को ।
छूट गया सब मइल पुराना ॥
आगे चढ़ चढ़ अखर समानी ।
शब्द शब्द का मर्म बिछाना ॥
संत बिना कोई समझे नाहीं ।
आगे जो जो भेद दिखाना ॥
कहने में आवे नहिं पूरा ।
उलटा सुलटा करत बखाना ॥
वाचक अपनी उक्ति लगावें ।
अमल बिना नहिं बूझ बुझाना ॥
संतन की गति संतहि जानें ।
और कहो कैसे पहिचाना ॥
अपनी उक्ति चतुरता त्यागो ।
संत बचन को करो प्रमाना ॥
वह कहते देखी निज अपनी ।
तू सुन सुन क्यों बुद्धि लड़ाना ॥
राधास्वामी सब से कहते ।
संत भेद कोई भेदी जाना ॥

Scanned with CamScanner

अमर सन्देश
वर्ष २१ अंक ३
जुलाई सन १९८८

बचन बाबू जी महराज-

सच्ची सेवा और भेंट पूजा का रूप

सांसारिक बंधनों में ग्रसित और फँसे हुए लोग बेपरवाही से कह देते हैं कि मालिक के सर्व व्यापक रूप की पूजा करना ही सच्ची पूजा है। ऐसे लोग मालिक की पूजा का अर्थ बिलकुल नहीं जानते।

मन का घाट बड़ा मलीन है। वहां काम क्रोध लोभ मोह अहंकार की मलीन धारें बड़े जोर से चल रही हैं। वहां सिवा मलीनता के कुछ नही है। उस घाट से जो २ कार्रवाइयां होती हैं, उन सबका रूप एक ही है। उस घाट की पूजा, मालिक की पूजा नहीं। केवल काल की पूजा है। कुछ लोगों को वहां चमत्कार दिखलाई पड़ा। उसको वे लोग मालिक का दर्शन मानकर संतोष करके बैठ रहते हैं। परंतु यह ऐसा है जैसे सूर्य की किरन के दर्शन होने से उल्लू की आंख मिंच जाती है और असली सूर्य के दर्शन बिलकुल नहीं हो पाते। उसी प्रकार वे लोग मन के घाट के चमत्कारों को मालिक का दर्शन मान कर मगन हो जाते हैं और संसारी क्रियाएं ब-दस्तूर करते हुए संतुष्ट रहते हैं। असल में वे बिलकुल मलीन स्थिति और हालत में पड़े हुए काल के पंजे में गिरफ्तार हैं।

मन के घाट पर बैठे हुए लोग ऐसा खयाल करते हैं कि मालिक ने जो बुद्धि और शक्ति दी है, उससे जो हम कार्रवाई कर रहे हैं, बस वही काफी और ठीक है। उससे विशेष रूप की अन्य कार्रवाई करने की जरूरत नहीं। दूसरे शब्दों में यह कि जो परोपकार या सार्वजनिक कल्याण की कार्रवाई हम कर रहे हैं, वही उचित और मुनासिब है। उससे ज्यादा कुछ करने की हमको जरूरत नहीं। ऐसे लोग मन के घाट की क्रियाएं करके संतुष्ट और उनमें मगन रह कर भारी भूल और गलती के शिकार हो गए। काल ने उनसे अपनी कार्रवाई कराने और इसी देश में फँसाए रखने के लिए विद्या बुद्धि का मलीन जाल फैलाया है।

इस जाल में से निकलने का एक ही रास्ता है कि संतों के उपदेश को प्यार से सुने, समझे और जाल से निकलने का प्रयत्न करे।

कुछ लोग कहते हैं कि मालिक को गुरु स्वरूप धारन करने की क्या जरूरत है। उनका कहना है कि गुरु स्वरूप धारण किए बिना भी मालिक अंतर में उपदेश देकर मन को हटा सकता है। यह बिलकुल गलत है। कारण यह कि (१) मन के घाट पर अंदर से भी कहने या उपदेश देने में आवे तो भी यह कैसे समझा जा सकता है कि वह मालिक का कहा हुआ अथवा मालिक का उपदेश है? (२) मन के घाट पर ब्रह्म वगैरा शक्तियां भी काल और माया के देशों की प्रेरणा कर सकती हैं तो उनकी परख पहचान, मनुष्य कैसे कर सकता है? वह किस तरह जान सकता है कि जो प्रेरणा आ रही है वह उसके मन की तरंग नहीं है? (३) मालिक

Scanned with CamScanner

के देश में पहुंचाने के लिए आंतरिक मार्ग पर गुरु के अतिरिक्त कौन है जो हाथ पकड़ कर ले चलेगा और रास्ता दिखलावेगा ? इसलिए सच्चे लोक से आए हुए या वहां तक पहुँचे हुए संत सतगुरु की खास जरूरत है।

संत केवल समझा बुझा कर ही बाहर की सरन से निकालने का प्रयत्न करते हैं। संतों के बचन सुन कर ही जो खिंच आता है, वह दयाल की सरन का अधिकारी है। ऐसे संत सतगुरु की पूजा. गुरु-पूजा है। अन्तर की, असली पूजा तो मन को गुरु के चरनों में जोड़ना यानी छठे चक्र पर चैतन्य धार से मेल करना है। छठे चक्र के नीचे मन और माया की विशेषता है। अन्तर की पूजा करने वाले को तन मन और धन से सेवा करने की भी उमंग उठती है। यह उसकी बाहर की पूजा है। अन्तर की सेवा पूजा न करे या न कर सके, किंतु बाहर में तन मन और धन से सेवा करना भी एक प्रकार की गुरु-पूजा है। यह सेवा शुद्ध प्रेम से होनी चाहिए।

बिना प्रेम के किया हुआ काम कि जिसमें मन शुद्ध हृदय से नहीं जुड़ता, मजदूरी है। पर संतों की किसी तरह और किसी भाव से भी सेवा की जावे, उससे कुछ न कुछ आंतरिक लाभ अवश्य मिलेगा। सेवा करने वाले पर ऐसे असर पड़ेंगे कि भविष्य में भक्ति फल प्राप्त हो सकेगा।

संतों के बचन सुनना, उनके दर्शन करना, उनके सहवास में रहना, इन सब कार्रवाइयों से जो असर पड़ते हैं, उनकी कीमत अमूल्य है। संतों को एक प्याला पानी प्रेम से पिलाया जावे तो वह भारी लाभ देने वाली सेवा है। संतों की सेवा, संसार से मन हटा कर प्रेम दान दिलाने वाली है।

सांसारिक बंधनों में जकड़े हुए मन को वहां से हटा कर मालिक के चरनों में अर्पण करना, इसका नाम सच्ची भेंट है। जहां २ मन का बंधन हो, वहां २ से शोध कर ढूंढ २ कर मन को निकालना और मालिक के चरणों पर न्योछावर करना, यह सच्ची भेंट पूजा है। इस प्रकार बंधन तोड़ते २ जीवन मुक्ति की अवस्था प्राप्त होगी। इस हालत के आने पर सब संसारी भोगों के मौजूद होते हुए भी वह उनसे आलिप्त रह सकेगा क्योंकि उसका कुल लक्ष्य और ध्यान गुरु के चरनों में लगा हुआ होता है।

ऐसा कहना कि मालिक सब जगह है, इसलिए हम चाहे जिस जगह और चाहे जिस प्रकार पूजा करें, वह मालिक की पूजा है, गलत है। जिनको अपने अन्तर में मालिक का दर्शन प्राप्त है, केवल वे ही मालिक को सब जगह देख सकते हैं।

Scanned with CamScanner

अमर सन्देश

वर्ष २१ अंक ३
जुलाई सन १९७८

स्वामी जी का कार्यक्रम

परम पूज्य स्वामी जी महाराज ता० २२-मई ७८ को कुर्ला तथा शामको शिवाजी पार्क बम्बई का सत्संग कर, बम्बई में ही ता० २५ मई तक वहां से इन्दौर पहुँच २६ मई को इन्दौर शहर में सत्संग कर २७ मई को खडंवा के पास गांव में तथा २८ मई को ढकल गांव के पास किसी ग्राम में सतसंग कर उत्तर प्रदेश की ओर चल पड़े।

ता० ७ जून १९७८ से पच्छिमी उत्तर प्रदेश का सत्संग करते हुए उत्तर प्रदेश के उत्तरी पूर्वी भाग तक निम्न कार्यक्रमों अनुसार व्यापक सत्संग देते हुए विहार प्रान्त का सत्संग किये।

७ जून गाजियाबाद शहर ८ गजरोला (मुरादाबाद) सुबह ८ जून चन्दौसी मुरादाबाद सायं ९ जून जटपुरा (काशीपुर रोड मुरादाबाद) सुबह १० जून बहेडी के पास (बरेली) १० जून ठिरिया नेवादा (बरेली) सायं ११ जून नरायन ठेर (पीलीभीत) सुबह ११ जून पूरन पुर (पीलीभीत) सायं १२ जून बेला (मलानो के पास शाहजहांपुर) सुबह १२ जून पलिया कला (लखीमपुर खीरी) सायं १३ जून रामकोट (सीतापुर) सुबह १३ जून सिधौली (सीतापुर) सायं १४ जून गोवा (निकट सूरतगंज की गांजर क्षेत्र सुबह १४ मनौली (जैदपुर रोड पर बाराबंकी) सायं १५ जून भेलसर चौराहा (बाराबंकी फैजाबाद रोड पर) सुबह १५ जून परशुरामपुर (बस्ती) सायं १६ जून रिठुआखार (सहिजनवा के पास गोरखपुर १८ जून देवरिया के देहाती क्षेत्र में।

१९ जून जतोर जि० सीवान प्रातः सहुली
" सायं
२० जून थावे जि० गोपालगंज प्रातः
समरदह " सायं
२१ जून हाई स्कूल रेपुरा गरखा जि०-छपरा प्रातः
राजेन्द्र विद्य मन्दिर मकेर " सायं
२२ जून मानपुर डाक बंगला (सोनपुर से ४ कि० मी०) प्रातः गवानलीपुर जि० वैशाली सायं
२३ जून राजापाकर जि० " प्रातः
मुजफ्फरपुर सायं
२४ जून गाय घाट जि०-पूर्वी चम्पारन प्रातः
मोतिहारी सायं
२५ जून अरेराज जि० पूर्वी चम्पारन प्रातः
पीयरा " सायं
२६ जून बाजिदपुर जि० दरभंगा प्रातः
दरभंगा सायं
२७ जून हसनपुर जि० समस्तीपुर प्रातः
समस्तीपुर सायं
२८-२९ जून पटना ३० जून आरा

पावन पर्व गुरुपूर्णिमा

परम पूज्य स्वामी जी महराज ने इस वर्ष भी गुरू पूर्णिमा का पर्व गोरखपुर में आयोजित करने की अनुमति दे दी हैं। अतः दिनांक १९ जुलाई व २० जुलाई ७८ को गुरुपूर्णिमा का सत्संग पूजन का कार्यक्रम गोरखपुर में सम्पन्न होगा।

—व्यवस्थापक

भूल सुधार

"अमर सन्देश" जून ७८ के अंक में भूल से गुरू पूर्णिमा की तारीख २२ जुलाई छप गई है-गुरू पर्णिमा तारीख २० जुलाई ७८ को मनाई जायेगी।

व्यवस्थापक

Scanned with CamScanner

हम सेवा के कार्य में लगे हैं

(सतसंग स्वामी जी महराज साबरमती यज्ञ अहमदाबाद २९-१२-७७ रात्रि ७-३० बजे)

[आज के दिन अहमदाबाद साकेत महा यज्ञ में श्री पीलू मोदी जी सतसंग में उपस्थित थे। जब पीलू मोदी जी साकेत महायज्ञ अयोध्या में आये थे तो भी एक आदर्श विवाह हुआ था और आज भी एक आदर्श विवाह हुआ। उसके बाद स्वामी जी का सतसंग हुआ। आज का सतसंग संक्षिप्त था।

—सम्पादक]

नर नारियों बच्चे-बच्चियों, यह बहुत ही अच्छा सुन्दर भावों का जो वायु मंडल और आकाश छा रहा है। हृदय में सबके बहुत बड़ी प्रसन्नता हो रही है। मनों में बड़ा उत्साह हो रहा है। यह सबको देखने को मिल रहा है। पीलू मोदी जी के बड़े आभारी हमारे जितने भी आए हुए हैं प्रेमी जन दूर से उन्होंने अयोध्या में भी देखा था। एक बात मैं जरूर याद दिलाऊँगा। उन्होंने बहुत अच्छी छोटी-छोटी सी बातें हिन्दी भाषा में बताई। कोई भी सरकार हो हमें इससे कोई मतलब नहीं।

१८ मह तक इन्हें काम सीखने दें

हम वर्तमान के इस समय यह जरूर कहना चाहता हूं। जो सरकार इस समय वर्तमान में देश का काम कर रही है उसको मैंने पहले ही पीलू मोदी जी से कहा था कि इसको समझने के लिए १८ महीने का समय दिया जाय। यदि १८ महीने तक कोई भी काम नहीं कर सकते हैं तो उस पर कोई विचार न किया जाय। १८ महीने तक सोचने दिया जाय। समझने दिया जाय। देखने दिया जाय। जानने दिया जाय। ज्ञान प्राप्त करने दिया जाय। वस्तुओं को हकट्ठा करने दिया जाय। और हिन्दुस्तान में कोई ऐसा अमानवीय कार्य समाज और देश में राजनैतिक और धार्मिक न करें।

इन्हें मौका दें

यदि देश में अमानवीय कार्य राजनैतिक या धार्मिक करेंगे तो देश में बहुत बड़ा नुकसान हो जाएगा। इसलिए हम सबका परम कर्त्तव्य है कि लोगों को अवसर मौका, समय सबको मिलना चाहिए। जो समय और अवसर और मौका आपने उन लोगों को ३० साल दिया था तो इन लोगों को भी कम से कम थोड़ा समय जितने दिन के लिए आपने अपने अधिकार से एक परिवर्तन किया और स्थापना की उतने दिन तो देना ही चाहिए।

हम एक परिवर्तन के लिए तपस्या कर रहे हैं

मैं कभी इस बात पर सहमत नहीं होता हूं जितने भी लोग चाहे इससे भी ज्यादा कष्ट में हों। लेकिन हम किसी के बारे में कुछ नहीं कह सकते हैं। हम एक परिवर्तन के लिये तपस्या कर रहे और तपस्या करा रहे हैं।

देश में खुशहाली चाहते हैं

एक आदर्श पैदा करना चाहते हैं। एक

Scanned with CamScanner

देश भक्ति पैदा करना चाहते है। एक मानवता पैदा करना चाहते हैं। एक सत्यता पैदा करना चाहते हैं। जिससे ये तमाम लोग ये चिल्लाते हैं और कहते हैं कि देश में हम खुशहाली चाहते हैं। मैं ऐसा समझता हूं कि जिस खुशहाली की तरफ देश के लोगों को ले जाना चाहते हैं उसका अभी उन्होंने निराकरण अपनी बुद्धि में किया ही नहीं। वे जानते ही नहीं हैं कि देश खुशहाल किस तरह से होगा। इसलिए बाबा जी जिन संकेतों को आप के सामने समग्र रूपों में नर नारियों के धर्म के और कर्म के रूप में रखते हैं उसको आपको सुनना पड़ेगा अन्य बातों को जितनी भी हैं उनको पहले ढीला करो। और थोड़ा सा भूलना।

काम करने के लिए विचार तो करना ही पड़ेगा

यह मानव का स्वभाव और अनिवार्य है। बुद्धि हर चीज का निर्णय कर सकती है अच्छे और बुरे का। लेकिन थोड़े दिनों के बाद यह सब चीजें आपको ज्यों की त्यों समझ में आ जायेंगी। कोई भी कार्य कर्त्ता देश का या कोई भी अधिकारी, कर्मचारी जनता का या जनता सब लोगों को मिलकर थोड़े दिनों तक किसी काम के लिये विचार तो करना ही पड़ेगा। और जिस कार्य का संदेश दे रहे हैं वह इसलिये दे रहे कि देश में देश के बच्चे, देश की माताय और देश के उन बच्चों के माता और पिता ऐसे बच्चों को अपनी भावना से पैदा करें।

महान आत्मा से देश हीरा और जवाहरात बनेगा।

ऐसा हृदय और ऐसा वह भाव शरीर पवित्र, सदाचारी, चरित्रवान, सत्यवाद। जब यह देश में पुकार होती है कि अच्छी महान आत्माओं का प्रादुर्भाव हो तो मैं तो यही समझता हूँ कि एक महान आत्मा आ जाय तो देश को कितना बड़ा मोड़ ले। परिवर्तन कर दें। दस आ जाय हो न जाने क्या हो जाय। चांदी बन जाय। और सौ, दो सौ, चार सौ आ जांय तो यह देश सोना बन जाय और कहीं हजार दो हजार महान आत्माओं का प्रादुर्भाव हो जाय तो ये देश रतन और जवाहरात बन सकता है। ऐसा मैं विश्वास करता हूं।

पीलू मोदी जी से सम्बन्ध

इसलिये बहुत अच्छी बातें हैं और मेरा तो पीलू मोदी जी का बहुत ही निकटवर्ती सम्बन्ध था। बराबर वार्तालाप होती रहती है और धीरे-धीरे बहुत मैंने परिवर्तन देखा इन विचारों में। वह मुझे बहुत प्रसन्नता हुई और मैं कभी कभी जब याद करता हूं तो यह फौरन तैयार हो जाते हैं कि महाराज जी के उस वायु मण्डल में और उन भक्तों के समक्ष जरूर चलेंगे। अभी आपको उन्होंने बता दिया की मेरा स्वास्थ्य ठीक न होने के कारण मैं प्रेम में बंध गया।

प्रेम में सब कुछ होता है

आप तो यह जानते हो कि प्रेम सात समुद्र पार भी ले जा सकता है और प्रेम नर्क में भी ले जा सकता है। और प्रेम जमीन पर भी बैठा सकता है। और प्रेम जो है लेटा भी सकता है बालू में रेत की। लेकिन ऐसी कोई बात नहीं है। आप देखते है कि कितना शरीर मोटा है कि जमीन में नहीं बैठा जाता है। इसलिये कुर्सी रखी गयी कोई ऐसी बात नहीं है। कोई बीमार हो वो पीलू मोदी जी शरीर से मोटे और बीमार। दोनों बातें हो गयीं। इसलिये कोई बात नहीं। नीचे बैठे ऊपर बैठे इसका कुछ नहीं। इसका मान करना ही नहीं चाहिए।

वक्त की बात होती है

एक वक्त होता है कि वही पति जिसको पत्नी परमात्मा मानती है। लेकिन जब जरूरत पड़ती है तब टट्टी पेशाब भी पति को उठाना

पड़ता है। कोई बात नहीं। यह तो बहुत बड़ी रहस्यमयी बात प्रेम की बात होती है।

सृष्टि की रचना का प्रारम्भ

अब आप हमारे इस सन्देश को सुनें। इसकी जरूरत अवश्य है तमाम हमारे नगर के अच्छे नागरिक और अच्छे विद्वान नीचे भी विराजमान है मैंने कल जो बात आपके सामने छोड़ दी थी। उसको जरा ध्यान से आप सुनें। जब प्रभू की प्रारम्भ में इच्छा हुई। ये देश नहीं था। नदी नहीं थी। नाले नहीं थे जानवर नहीं थे। आसमान नहीं था। पानी नहीं था तो फिर किताबें, मुल्ला नहीं थे और महात्मा नहीं थे और ये नहीं। जब आदमी नहीं था आसमान नहीं था। जमीन नहीं था। तो फिर यह झगड़ा पाप का पुण्य का राज करने का रैयत का कुछ भी नहीं किसी प्रकार का नहीं था। ये परमात्मा की इच्छा। उस प्रभु की इच्छा। अनामी पुरुष की इच्छा। उसने क्या काम किया। क्या उसने क्रिया की। क्या संकल्प उठाया। क्या उसकी इच्छा हुई, अब सुनें। उन्होंने अपने से एक शक्ति को अलग कर दिया।

सतपुरुष प्रसन्न हो गये

उस शक्ति ने बहुत दिनों तक बहुत मुद्दतों तक, तपस्या की। तपस्या करते करते वह सत्त पुरुष प्रसन्न हो गये, खुश हो गये।

उन्होंने कहा तुम क्या चाहते हो। मैं तुम्हारी तपस्या से बहुत प्रसन्न हूँ। बहुत खुश हो गया हूँ।

उन्होंने कहा कि मैं आपके समान ही एक राज स्थापित करना चाहता हूं।

और उन्होंने उस तपस्या के वशीभूत होकर उस अनामी पुरुष ने एवमस्तु कर दिया। और उन्होंने एक राज बक्सा। बिना आत्माओं के, बिना रूहों के, ये रचना यहां स्थापित नहीं हो सकती थी। उन्होंने एक छोटा सा खजाना जीवात्माओं का रूहों का दे दिया कि आओ मैं तुमको एक राज देता हूं और ले जाओ। लेकिन एक बात जरूर है कि इन जीवात्माओं को वहां ले आना तो वापिस आने का एक रास्ता जरूर दे देना।

उन्होंने कहा ठीक है रास्ता दे दूँगा। मैं उनको रखूंगा ठीक से और फिर उन जीवात्माओं का भंडार दिया।

सृष्टि की रचना इसी प्रकार हुई

और नीचे तीन लोक, चौदह भवन, जल पृथ्वी अग्नि वायु आकाश तमाम देवी-देवता और तमाम जीवात्माएँ। और फिर तमोगुण रजोगुण, सतोगुण। स्थूल शरीर लिंग शरीर सूक्ष्म शरीर कारण शरीर। ये तमाम उन्होंने लोकों की विधित रचना कर दी। और जब जीवात्माएं इस मृत्युलोक में मानव रूपी मकान में आई तो उस समय आंख खुली थी। कान खुले हुए थे। ब्रह्मवाणी प्रायः सुना करते थे। आकाशवाणी सब सुनते थे। सबको बोध था। सबको ज्ञान था। सब स्वस्थ्य थे। सब भव्य थे। कोई कुरुप नहीं था। सब सुन्दर थे और सब त्रिकालदर्शी थे। नर नारियों को पूर्ण रूप से बोध था। यह बात।

ये जीवात्मायें वापस चली जाती थी

जब तक रहें और वापस हो गये। घट जाने लगे। पीछे देखा कि यह सारी की सारी तपस्या मेरी भंग हो जायगी। व्यर्थ हो जायगी यह तो सबके सब जितने भी हैं सब वापिस जाए चले जा रहे सीधे।

कर्मों का विधान बनाया

तो फौरन अपनी शक्तियों को पैदा किया और एक कर्मों का विधान बनाया। एक नियम बनाया और कर्मों के विधान के नियम के साथ जिस प्रकार का उन्होंने विधान बनाया वैसे ही उन्होंने कारागार स्थापित कर दिए और उससे

Scanned with CamScanner

आज देश में यह हुआ कि चार लाख चौरासी लक्ष योनियां और नर्क, और अमीर और गरीब लूले लगड़े अंधे बहरे, स्वर्ग और बैकुण्ठ, आदिक तमाम चीजों को आप के सामने रख दिया। इतना लम्बा चौड़ा कर्मों का झगड़ा, और उसका जनम और मरण का, जिसका कोई अन्त नही।

बिना महात्माओं के कोई इस रहस्य को नहीं जान सकता।

बिना महात्माओं के, बिना सन्तों के इस रहस्य को कोई भी नहीं जान सकता है। तो किस प्रकार से इस सृष्टि की रचना की गयी जिस तरह से इसका सिमटाव होगा। जीवात्माए पुनः अपने घर में, अपने पिता के पास वापस पहुँच जायेगी। बिना सन्तों के महा पुरुषों के यह कार्य होना अब आप के लिए बहुत मुश्किल और कठिन हो गया। तो हम दिन भर दिन अधिक से अधिक जकड़ते चले गए।

मैं सब याद दिला रहा हूँ

तो मैं सबकी बात आप को यह याद दिलाता हूं कि अलग अलग सबका काम होता है। ब्रह्मा का काम ब्रह्मा करेंगे शिव नहीं करेंगे। शिव का काम अपना शिव करेंगे ब्रह्मा नहीं करेंगे। विष्णु का काम अपना है वह ब्रह्मा और शिव नहीं करेंगे विष्णु नहीं करेंगे।

विष्णु का काम पालन पोषण करने का। ब्रह्मा का काम उत्पत्ति करने का और शिव का काम संहार करने का। अपना अपना काम।

एक का काम दूसरा नहीं कर सकता

यदि विष्णु से कहा जाय संहार करो तो वह नहीं करेंगे। ब्रह्मा से कहा जाय कि तुम पालन पोषण कर दो तो यह नहीं होगा। यदि विष्णु से कहा जाय कि आप उत्पति कीजिए तो नहीं। ब्रह्मा का काम उत्पत्ति करने और विष्णु का काम पालन करने का शिव का काम संहार करने का। अपना-अपना, वह देवता अपने स्थान पर बैठकर यह तीनों काम करते रहते हैं। और उसने अपने देवी-देवताओं को यह आदेश दे दिया है कि तुम काम करते रहो और इनमें से किसी को भी मेरे पास में मत ले आओ। अलग अलग रखो।

न्याय कर्ता रख दिया

उन्होंने एक न्याय कर्ता मजिस्ट्रेट रख दिया कि जितनी भी जीवात्माएं उनका तुरन्त फौरन फसला करो और फौरन उनको रवाना कारागारों में कर दो। इस तरह से जीवात्माओं के साथ में वहां पर अपने किए गए शुभ अशुभ कर्मों से बराबर आटोमेटिक कार्य उनका चलता रहता है। और जीवात्माओं की समझ में मानव तन में आता नहीं। इसी लिए आपको यहां भेजा गया है कि जिसका जो काम है वह अपना-अपना काम करेंगे। वही काम आपके सामने दृष्टिगोचर मानव सृष्टि में और बुद्धि में आता है।

जिसको जो काम सौंपा जाता है वही काम करता है दूसरा करेगा तो काम खराब हो जाएगा। इसलिए अगर विधिवत हर कार्य किया जाय घर का हो समाज का हो, आत्मा का हो भगवान का हो तो यह सभी काम सबके सब अपनी जगह पर ठीक होते चले जांय और अन्तिमगत्वा जीवात्मा को निवृत्ति मिल जाय, छूटकारा मिल जाय। जीवात्मा अपने परम पिता परमात्मा को मरने के पहले प्राप्त करले और उसे सभी प्रकार का मानव रूपी मकान में ज्ञान प्राप्त हो जाय। ज्ञान का भंडार खुल जाय।

फँसने का भी काम है और निकलने का भी

लेकिन दुख इस बात का कि विधिवत हमें पता नहीं है कि किस तरह से हमको काम

Scanned with CamScanner

करना होगा। या तो फँसने का काम करो या तोड़ फोड़ करो। अगर निकलने का काम करते हो तो आबादी करो। आबाद करोगे तो निकल जाओगे। और तोड़ फोड़ करोगे तो फंस जाओगे। यह उसके यहाँ नियम बना हुआ है।

अनुकूलता में काम लेकर लाभ उठाये

जो उसने आसमान, जमीन, जल, वायु अग्नि बना दी इससे जरा सा भी आप छेड़ छाड़ न करें अनुकूलता मे सबसे काम ल। हवा से काम लें, पानी से काम ल। पृथ्वी स काम लें। आकाश से काम लें। तो यह सब अपना अपना ठीक काम करेंगे। लेकिन जरा भी आपने गड़बड़ी की तो यह तोड़-फोड़ करके अलग कर देंगे।

देवता विचार विमर्श करते रहे

इनको यह आदेश है। जब आदेश उनको सब कुछ दे दिया अधिकार तो यह क ते रहते हैं तो कल जो देवता रात्रि को मंत्रणा अपनी करते हैं। रहे प्रसन्न मुद्रा में। आज उन्होंने उससे कुछ निष्कर्ष निकाला कि कुछ न कुछ यानी नियम पास करना चाहिए। आज भी बहुत वार्तालाप ३३ करोड़ देवताओं की चलती रही। और बराबर आदान-प्रदान अपने-अपने दिमाग के वार्तालाप होते रहे।

देवता विधान बनाना चाहते

यह ऐसा बड़ा संगम उन देवताओं का उपस्थित रहा विचारवान और विनिमय कर रहा कि किस तरह से मानव सृष्टि में विधान लागू किया जाय। जैसे हम लो। तुम्हारे सुख के लिए एक विधान, एक नियम, एक काम करना चाहते हैं इसी तरह से वह काम हम से क्यों नहीं बनता है क्योंकि हम उसका विधिवत सही रूप में ढंग से तरीके से, एक सिलसिले स वह हम जानते नहीं करना। इसलिए बीच बीच में टूटता है फूटता है, टूटता है फूटता है। उससे हम सब लोगों को नाना प्रकार की तकलीफ मिलती है। अब यदि देवता विधिवत प्रसन्न हो जायें तो उनके यह नियम उनके आदेश और उनके यह नियम पास हो जाय।

प्रेरणा किसी और की होगी

और फिर वह कर्म करें तो यह सब कार्य बिल्कुल सृष्टि में होगा। आपके द्वारा मनुष्यों के द्वारा। लेकिन देखा किसी और की सहयोग किसी और का। काम हमारा होगा समझ इसको आएगी समझ देने वाला कोई और होगा। आखें हैं वह काम करेगी हमारा लेकिन आंखो के पीछे कौन बैठा हुआ है। वह भगवान की चेतना जिसको जीवात्मा कहते हैं। अगर उसको हटा दिया जाय तो बाहर की आंखें क्या काम करेंगी। यह तो आपको सोचना ही है। आप की आंखें कुछ सही काम करती है। जब अन्दर शक्ति हट जाती है तो बाहर की आंखें क्या काम करेंगी। न आंख काम करें न कान करें। न हाथ काम करता है न पैर काम करते हैं।

उस शक्ति से सब काम होने लगेगा

तो एक शक्ति है वह बैठी हुई है। और उसी शक्ति के ऊपर में उन देवताओं का संचार होना चाहिए। जब देवताओं का संचार उस शक्ति पर हो जायेगा। यानी देवताओं का उनके ऊपर में असर हो जायगा तो क्या हो जायगा कि वह सब पूरा का पूरा उस चेतना का अधिकार इन्द्रियों पर आंखों पर बुद्धि पर चित्त पर उसका जब अधिकार हो गया तो सही सही सब काम, हर काम होने लगेंगे। घर के हों समाज के हों, देश के हो सत्य के हों प्रेम के झूठ के हों या और धोखे धड़ी के हों, दुराचार के हों, कुभावनाओं के हों। सब चीजें अपनी अपनी जगह पर आ जायेगी। जो बुरी चीजें होगी वह छूट के गिर जाएगी और अच्छी चीजें स्थापित हो जाएँगी। तो असल में चीज यह है

Scanned with CamScanner

कि देवताओं का शक्ति का आपके अन्दर अलौकिक चीज बैठी हुई भगवान की जिसको जीवात्मा कहते हैं उस पर शक्ति का देवताओं होना चाहिए। लोग कहते हैं महात्मा क्या कर देते हैं।

गुजरात में अभी कुछ नहीं हुआ

हम तो देखते हैं गुजरात के नर-नारी में अब वह प्रेम का स्रोत चला। अभी कुछ नहीं हुआ अभी तो बाबा जी ने कोई बूटी नहीं पिलाई। अभी तो। जो बूटी पिलानी है वह तो वैसे ही बाबा जी ने रख दी। अभी कुछ नहीं। अभी तो, केवल मतलब यह है, देखा दाखी हो रही है। बस उसी में यह देखा जा रहा कि यह क्या हो रहा। इसी को देखकर सब आश्चर्य करते हैं। लेकिन जब प्रेम की घंटी बजेगी उस समय पर आप देखेंगे।

दीवाने आग में कूद जायेंगे

कितने-कितने दीवाने कितने-कितने पागल आग काभी अगर ढेर लगा दिया जाय तो उसमें भी सामने कूद पड़ेंगे और उनको इतना बोध नहीं रहेगा कि मैं आग में जल जाऊँगा। अभी तो आपने कुछ देखा नहीं। इसलिए शक्ति का देवताओं का भगवान को उस चैतन्यता जीवात्मा पर होना अनिवार्य और जरूरी है। और उनसे शक्ति पाकर जीवात्मा अपनी शक्ति को संग्रह कर और फिर इन इन्द्रियों पर हावी हो जाय और उनको अपने वस में कर लें। और जब जरूरत हो तब इनसे काम लें और सबको समेट करके अपने पास में रखे।

प्रेम और ज्ञान की सत्ता

इसी को कहते हैं योग सत्ता, इसी को कहते हैं ज्ञान सत्ता। यही है प्रेम-सत्ता इसी को कहते हैं सत्य सत्ता। इसी का नाम है प्यार इसी को संग्रह कर लिया तो सब कुछ आ गया समय में। तो देवताओं का शक्ति प्राप्त होना अनिवार्य और अवश्यक है। और उस शक्ति प्राप्ति के लिए आज भी रात को देवताओं की बराबर जागरन मीटिंग होती रही। वह भी नहीं सोए। विश्राम नहीं किया। इसी पर मंत्रणा उनकी हो रही। इस सतयुग आगमन ढिढोरे में इतने बड़े देवताओं का आवागवन हुआ है।

मुझे उन पर पूरा विश्वास है ३१ मार्च ८० आने दीजिए

मुझे उस पर पूरा विश्वास है। और समय आने पर मैं आपको ३१ मार्च सन ८० को बताऊँगा। जिस दिन खतम होगा उस दिन मैं आपको बताऊँगा कि देखिए मैंने साबरमती नदी में २९ दिसम्बर सन ७७ को क्या कहा था कि ३१ मार्च जब ८० आएगा तो मैं आपको बताऊँगा अब देश की हालत तो यह देखिए। और उस समय पर जब एट्टीटू यानी ३१ मार्च सन ८२ जब लगेगा उस समय का जब दिन आएगा तब यह बाबा जी आपको बताएंगे कि अब देखिए देश में अब ये क्या है। उस समय पर सारा देश और सारे देश के मानव चाहे वह दिल्ली में हों चाहे अहमदाबाद में हों चाहे वो बम्बई में हो। चाहे वे अमेरिका में हो या और किसी देश में हों इससे हमें कोई मतलब नहीं। लेकिन देवताओं का जब शक्ति पात होगा तो एक तरफ नहीं होगा। बड़े-बड़े विदेशों के राष्ट्रपतियों के मस्तक पर भी होगा। यहीं की चकाचौंध नहीं है। यह ऐसा आवाह, और ऐसा संकल्प और ऐसी प्रार्थना और ऐसी आरजू ऐसी मिन्नत यह नहीं की गई। ऐसी भिन्नत की गई कि उसका कार्य आपके सामने होगा।

सब कष्ट सहेंगे

यह सबके सब कष्ट उठाने के लिए इस रेती में पड़े हुए हैं। हम उन सबके आभारी हैं। चाहे कोई काम करो या न करो। चाहे

Scanned with CamScanner

किसी की जेब कट जाय चाहे किसी का समान चला जाय उसकी परवाह तुम मत करो।

मेरा पचास चला गया। मेरा १०० चला गया। मेरा कम्बल चला गया। मेरा ये चला गया। लेकिन साबरमती की जो मिट्टी तैयार की जा रही, जिसके हीरे और जवाहरात चले गए उसका यह तो नहीं चला जायेगा। यह मिट्टी जब तुम लेकर जाओगे और अपने अपने खेतों में छोड़ोगे तो वह मिट्टी हीरे-जवाहरात का काम करेगी वह तो वो नहीं कोई ले जाएगा।

महात्मा के पिछे लोग क्यो पागल रहे

इस बात का किसी को भी बोध नहीं किसी को भी ज्ञान नहीं कि महात्मा के पीछे इतने पागल क्यों हो गए। गोपिकाएँ पागल क्यों हो गई। ईसा मसीह बड़े में इतनी जेनरेसन क्यों उनकी याद करने लगी। क्या आपने कभी इस पर सोचा? इस पर विचार किया। कुछ न कुछ उनके पास होगा तभी इतने फालोवर उनके हो गए। और बाबा जी आपके लिए क्या कहते हैं कि सन ७५ के पहले हिन्दुस्तान में एक करोड़ फालोवर थे जो आप से बताया नहीं गया था। लेकिन कहा गया था। कागज नहीं दिखाया गया था। जगह नहीं दिखाई गई। यह कहा गया था कि ७५ के पहले हिन्दुस्तान में एक करोड़ आदमी तैयार हो गए।

आगे को भविष्यवाणी

और फिर बाबा जी ने कुछ और कहा इस पर विश्वास किसी को नहीं हुआ और अब बाबा जी यह कहते हैं कि ३१ मार्च सन ८० तक इसी हिन्दुस्तान में १० करोड़ आदमी तैयार हो जाएंगे। यह जो पीलू मोदी जी बैठे हुए हैं उनकी जिन्दगी रही, यह किराए का मकान रहा, इसमें से जीवात्मा न निकाली गई तो उस समय पर पीलू मोदी जी को दिखाएंगे कि हमने क्या कहा था।

जब १० करोड़ हो जायेंगे तब क्या होगा

बड़े ध्यान से यह १० करोड़ आदमी जिनके साथ १०-१० आदमी लगे होंगे कितने आदमी होंगे यह रात को सोचिएगा आप। मुझे नहीं कुछ सोचना है। मुझे तो प्रार्थना देवताओं से करनी है कि सतयुग आगवन जो यहां पर आपको दिखाई देता है उसमें ३३-करोड़ देवता विराजमान हैं। मुझे तो आपको उसका नक्शा दिखाना है। उसे दिन को नहीं सोच सकते हैं। रात को सोचिए कि सन् ८० ३१ मार्च को १० करोड़ और एक आदमी के साथ में बच्चे, मित्र मिलकर १० आदमी। तो जब वह १० करोड़ आदमी हिन्दुस्तान में प्रचार करेंगे उस समय आपको सोचना होगा कि वह काम करेंगे।

जब बनाने का इशारा होगा तो बन जायेगे

आपकी बुद्धि में बाबा जो जमाना चाहते हैं। बैठाना चाहते हैं। चेतना ले आना चाहते हैं समझ ले आना चाहते हैं। वह बात। हम ही दुनियां को बनाते हैं हम ही दुनियां को बिगाड़ते हैं। जब हमारा इरादा हमारा विश्वास इस दुनियां को बनाने का हो जाएगा तो दुनियां बन जाएगी। जब हमारा इरादा इस दुनियां को बिगाड़ने का था तब हमने इसको बिगाड़ा था। हमारा इरादा अब यह हो रहा है कि दुनियां बने और अच्छी दुनियां बने। अच्छे इन्सान बने। सच्चे इन्सान बने, सुन्दर इन्सान बने और सत्यवादी इन्सान बने। जब इरादा पक्का हो जाएगा तो उस इरादे के साथ परमात्म शक्ति सहयोग चौबीसों घन्टे देती रहती है।

छोटी छोटी बाते बड़ी होती है।

यह बड़ी छोटी बातें है लेकिन है बहुत

Scanned with CamScanner

बड़ी चीजें। आज यह जो सामने हमारे पोलू मोदी जी देख रहे जन समूह को इससे ज्यादा जन समूह पीछे टेन्टों में बैठा है। इससे ज्यादा टेन्टों में बैठा है सामने नहीं है आंखों के। इतना बड़ा जनसमूह इस साबरमती में उपस्थित है। वह जो कैम्पों में बैठे हुए हैं यह ऐसी वैसी चीज नहीं है इसलिए नर-नारियों, बच्चे-बच्चियों, बाबा जो अन्दर रखे हुए हैं। यह बाबा जी का दफ्तर है। (सिर की ओर इशारा करके) यहां इधर देखिए इसमें सारा मसाला और सारा खजाना इसमें रखे हुए हैं। कपड़ा उतार दीजिए या और कुछ कर दीजिए इस दफ्तर का पता लगा नहीं सकते हैं। क्या रखा हुआ है, इससे क्या किया जाएगा इससे क्या समझाया जाएगा और इससे क्या दिखाया जाएगा यह तो वक्त आपको बताएगा। हम तो एक साधारण आदमी है।

मुझे अपनी कोई चिन्ता नहीं रही

मां ने जन्म दिया है उन्होंने पाल-पोस कर दूध पिलाया है उनका आशिर्वाद मिला। बड़े हो गए महान जन गुरूजनों का आशीर्वाद मिल गया। उनकी दया दृष्टि हो गई। हम तो बहुत ही उनके आभारी हैं। और चौबीसों घन्टे जो उनका हुकुम और आज्ञा है उस काम को सेवक समझकर के कर रहे हैं।

हम महात्मा नहीं बनते

हमने न कभी स्वप्न में सोचा है कि हम महात्मा बनेंगे। न यह कभी हमने स्वप्न में सोचा है। कि हम विद्वान बनेंगे। हमने तो यह सोचा है। और यह हमको बताया गया है आशिर्वाद देकर कि तुम जिन्दगी के अन्तिम श्वास तक इस जगत में सेवक रहना। सेवा का काम करना।

वह सेवा का कार्य है।

तो काम इस समय पर सेवा का हो रहा है ऐसा मेरा विश्वास है कि जो सेवा का काम प्रारम्भ किया गया है उसके लिए हम बिल्कुल एकाएक तैयार हैं समर्पण होने के लिए। जिस प्रकार से भी हो जाए। यह किराए का मकान है आज रहे कल रहे। इसकी न आज की चिन्ता न इसकी कल की चिन्ता। इसमें रहने वाली जीवात्मा रोज निकलती है और रोज आती है बड़ी बड़ी मंजिलों की सफर करती है लौट करके चली आती है। अपना काम कर दिया है। चिन्ता यदि है तो आपकी है। और मानव-अधिकार के ही द्वारा चिन्ता आपकी रहती है कि आपने मानव अधिकार को खो दिया और खतम कर दिया। अपने अधिकार से जीवात्मा का आप लाभ प्राप्त कर लें।

इधर का भी काम हो और उधर का भी

यह चाहता हूँ कि मानव इधर का भी और मानव उधर का भी, यह भी लोक और वह भी लोक। इसको भी अच्छी तरह से देखो और आराम से रहो। और जब इसको खाली करो इसको छोड़ो किराए के मकान से जब निकाले जाओ तो यह मकान सबसे पहले आबाद हो जाना चाहिए। इसमें से निकलो और अपने सुन्दर मकान और सुन्दर आनन्द के महल में आराम से रहने लगो जहां पहुँच कर हमको कोई भी न दुखाए। न तुमको निकाले। न तुमको मारे न जेलखाने में भेजे और न वहां झूठ है। न वहां कारखाने हैं और न वहां कपड़े हैं न बच्चे हैं न वह जन्मते हैं न मरते हैं।

ऐसे घर को जल्दी से जल्दी तैयार कर लो

ऐसे घर को जल्दी से जल्दी तैयार कर लो। इससे निकाल कर पहले जाओ और लौट करके चले आओ। बाबा जी की कामना दोनों लोकों को सुरक्षा है। यहां भी अच्छे और उधर भी अच्छे।

Scanned with CamScanner

गुरू महाराज का काम निरन्तर होगा

इस तरह का कार्य जो भारत में सेवा का का गुरू महाराज ने किया है उसको निरन्तर वह होगा और यह काम किया जाएगा। वह बहुत अच्छी और सीधी सरल बातें आपके सामने रखी जाती हैं। और इसमें बड़ा गूढ़ और गुप्त रहस्य छपा हुआ है। दुनिया जरूर बदलेगी। मैं पीलू मोदी जी को एक बात याद दिलाऊंगा और मैंने आपसे कहा कि अभी तो दुनियां बहुत ज्यादा घोर निद्रा में अज्ञान निद्रा में सो रही थी। लेकिन जब ईश्वरीय एक तमाचा लगा तो उठकर बैठ गयी।

आगे एक तमाचा और लगेगा

उस बैठने मे ऐसे-ऐसे नींद ले रही है। और हमारे पीलू मोदी जी जब नींद से उठते होंगे तो बैठकर भी सोते होंगे।

ऐसे। और एक और तमाचा पड़ने वाला है। इसी तमाचे में ऐसे खड़े हो जाएँगे और चकाचौंध हो जाएगी कि क्या हो गया। तब तक तीसरा तमाचा पड़ेगा बस ज्ञान हो जाएगा।

सबको ज्ञान हो जायेगा

देखिएगा कि किस-किस को ज्ञान नहीं होता है। जो लोग यह कहते हैं ज्ञान नहीं होगा वह तो वक्त और समय आपको बता ही देगा। बाबा जी की बातें आपके सामने जो नोट की जा रही हैं ये कोई ऐसी नहीं हैं। सबका एक-एक बात का इतिहास बन रहा। आपके सामने।

सब मिलकर काम करो

इसलिए सब लोग मिलकर प्रेम के साथ यश प्राप्त करो, मान्यता प्राप्त करो ज्ञान प्राप्त करो।

जयगुरुदेव

सतयुग आगवन साकेत महायज्ञ (तृतीय)

काशी विश्वनाथ हर-हर महादेव जी का स्वप्न

बाबा जयगुरुदेव को-काशी पहुँचों

सतयुग आने की तैयारियां करो-मैं शामिल रहूँगा।

दो करोड़ नर-नारियों का जमाव बाबा (जयगुरुदेव) के आवाहन पर

१५-२-७९ से २५-२-७९ तक गंगा की रेती में--देशवासियों

जल्द चलो-काशी पहंचो-मुक्ति लो।

पूर्णाहुति शिवरात्रि को २५ फरवरी १९७९ में

—जयगुरुदेव धर्म प्रचारक संघ

Scanned with CamScanner

अमर सन्देश
वर्ष २१ अंक ३
जुलाई सन १९७८

संसार दुख का स्थान है

(सतसंग ब्यावर (राजस्थान) दिनांक २३-३-६८)

प्रार्थना कैसे करें

प्रार्थना के ऊपर ध्यान रखना चाहिये। इससे जीव काम, क्रोध, लोभ, मोह में नहीं बहता है। प्रार्थना पर ध्यान रखने से साधन भजन भी ठीक होता है। काम, क्रोध लोभ आदि ऐसे दूत हैं कि साधन भजन नहीं होने देते। यह सब हमारे विचार की कमी से होता है अगर एक ही शब्द पकड़ ले तो काम बन जाय। हमें पूरा विचार रखना चाहिये। नीचे से ऊपर उठो। सावधानी से रहो। जो गिरे हैं उनका उठना मुश्किल है।

सभी नर नारी दुखी हैं

सभी नर नरी दुखी हैं। कोई आदमी ऐसा नहीं चाहता है कि उसे दुख मिले। हर कौम के पूरब वाले या पश्चिम वाले लोग हों सभी सुख की तलाश में हैं। मगर कोई आदमी आज के युग में सुखी नहीं है। चारो ओर दुख ही दुख है। इससे यह मालुम होता है कि सब रास्ते हमारे गलत हैं कोई सही नहीं।

परमात्मा की चीजें सबके लिए

थोड़ा सा विचार करो कि परमात्मा ने मनुष्य बनाया। आदमी के लिये सूरज, चांद इत्यादि बनाया। इन चीजों में कोई भेद नहीं ये चीजें सबके लिए एक सी हैं चाहे वह किसी कौम का या किसी देश का हो। परमात्मा ने जो स्वाभाविक चीज दी जीवित रहने के लिए उनमें कोई भेद नहीं। यह इसलिए कि आप इनसे ज्ञान प्राप्त करो। और किसी में भेद न करो।

आज की स्थिति

मगर आज हम सब नर नारी दुखी हैं, तन से भी, मन से भी और लोगों से भी। पत्नी पति से दुखी है और पिता पुत्र से हर एक किसी न किसी कारण दुखी है। कारण कि इस संसार का यह खेल तमाशा आपने समझ नहीं पाया। टकरा गये। हमने जब से घर छोड़ा तब से कितनों को सहायक समझा मगर कोई वास्तव में सहायक नहीं।

बुद्धि का फैसला गलत

बुद्धि इस दो आंखों के देखे का फैसला देती है। यह परमात्मा के बारे में कोई फैसला नहीं दे सकती। इससे बुद्धि के फैसले से काम न चलेगा। तुम्हें यह किराये का मकान (मनुष्य शरीर) खाली करना ही पड़ेगा। तुमने क्या किया यह सोचो। परन्तु वह तुम्हें छोड़ नहीं सकता। संसार की सारी वस्तुयें यहीं छूट जायेंगी : यह विचार करो। तुम्हें भगवान को प्राप्त करने का जन्म जात अधिकार है।

नाम की महिमा

उस परमात्मा के मुखारविन्द से जो शब्द लगातार निकल रहा है जो सदा होता रहा है उसे नाम कहते हैं। वह नाम सबके आदि में

Scanned with CamScanner

था। आदि से भी पहले था। यह नाम बोध कराने के लिए था। उसे पाकर ही सब कुछ जाना जाता है।

हम कहां से आये

हम कहां से आये और कहां जायेंगे? इन प्रश्नों का उत्तर यदि आप नहीं जानते तो महात्मा के पास जाइये। वे समझावेंगे। एक दिन सभी को जाना है। ब्यावर वाले क्या नहीं जायेंगे? मन्दिर, मस्जिद और पोथी क्या सिखाते हैं? एकान्तवासी महात्मा के अनुभव क्या है? यह सब हम लोग भूल गये। मैं कहता हूं कि मन्दिर मस्जिद और गिरजाघर हैं इनके इष्ट हैं पर आराधना करने पर यदि उपदेश न दे सके तो क्या लाभ? बगैर उपदेश जाने हुये यदि आप अपने को सच्चा समझते हों तो पागलपन है नशे में आप चाहें जो कह लें।

एक प्रसंग

एक आदमी था। शराब पीकर बीच सड़क पर खड़ा था। उधर से बादशाह की सवारी आ रही थी। लोगों ने उसे हटने को कहा तो उसने जवाब दिया कि मैं बादशाह हूं। दूसरा कौन आ रहा है?

बादशाह ने कहा कि इसे कल दरबार में पेश करो।

दूसरे दिन दरबार में पेशी हुई। पूछा कि कल क्या कहते थे।

उसने उत्तर दिया कि महराज जो कहता था वह तो गया। मैं तो गरीब सामने हूं।

सबने एक नशा पी लिया

इसी प्रकार सबने कोई न कोई नशा पी लिया है। किसी ने विद्या की किसी ने बुद्धि की। किसी ने क्रोध लोभ मोह की आदि आदि। अब जब वह नशा उतरे तो असलियत का पता लगे जो भी नशा आपने पी लिया है उससे आपको मुक्ति मिल जायेगी। इस नशे से कोई नहीं बचा है, इससे पारसी, जैनी, हिन्दू मुस्लिम कोई नहीं बच सकता। आंखों से आंख, मन से मन, अहं से अहं का जब टकराव होता है तो आनन्द और शान्ति कहां?

धर्म सब एक हैं

धर्म दो नहीं हैं। सब धर्म एक हैं धर्म क्या है इसे सुन लीजिये। जिस काम को करने में हाथ पैर दिल दिमाग में डर लगे तो वह है अधर्म और यदि काम करने में डर न लगे तो वही है धर्म।

यह धर्म और अधर्म इस किराये के मकान पर है। जीवात्मा यह फौरन बता देती है कि क्या धर्म है और क्या अधर्म है। इसी आधार पर धर्म और अधर्म की परिभाषा वेद करता है। यही सब धर्म प्रवर्तकों ने बताया।

लालच से पाप होता है

जब किसी चीज को बेचते हो तो मन में लालच आती है कि और पैसे ले लूं पर आत्मा रोकती है। यही पाप है। प्रलोभन और लालच से बुद्धि सो जाती है। आत्मा की ठेस का पता नहीं चलता तब पाप करने लगते हैं।

सब में एक आत्मा है

यह आत्मा सब में एक है। सभी मनुष्य जाति को परमात्मा ने एक ढंग से बनाया। सब के शरीर में जीवात्मा को एक ही स्थान पर बैठाया। Soul आत्मा रूह सबका एक ही जगह पर, एक स्थान पर है वह सब में है। मगर ना समझी में इस अंधेरे में आकर हम टकरा गये। हमने समझा नहीं, न आत्मा की दृष्टि से विचार किया।

हर धर्म में गुरू की पूजा

हर धर्म में पहले गुरू की पूजा होती है। सब अपनी अपनी जबान में पहले गुरू की पूजा

Scanned with CamScanner

करते हैं। केवल जबान का फर्क होता है। हम चाहे लाइट कहें या प्रकाश या रोशनी। मगर मतलब सबका एक ही है। अब मतलब न समझें तो टकराव हो जाता है।

प्रेम चला गया

अब आदमी में प्रेम कहां रह गया। प्रेम चला गया। प्रेम बिना आदमी पशु हो गया। जानवर की भांति व्योहार करने लगा। शास्त्रों में लिखा है कि शिव नेत्र होता है। व्यास, शिव ब्रह्मा, नारद आदि उन्हीं को मिल सकते हैं जिनका शिवनेत्र खुला है। औरों को नहीं मिल सकते हैं। मैं कहता हूँ कि शिव नेत्र प्राप्त करने का सभी को अधिकार है। उसे मैं पुस्तकों से भी सिद्ध कर दूंगा।

सतयुग आदि में

'सतयुग योगी सब विज्ञानी' सतयुग में सभी योगी थे। वे तत्व को जानने वाले विज्ञानी थे। त्रेता में यज्ञ करते थे। द्वापर में शरीर में बल था प्राणायाम आदि होता था। अब कलियुग में आदमी कमजोर हो गया। ऐसे समय में सरल मार्ग हो तभी सब लोग फायदा उठा सकते हैं। कलियुग में छिन छिन में पाप होता है। जब तक शिवनेत्र नहीं खुलता तब तक स्वर्ग और बैकुण्ठ या मुक्ति नहीं प्राप्त हो सकती। वह शिवनेत्र आप के पास है मगर आप उधर का दरवाजा भूल गये। महात्मा उस दरवाजे को जानते हैं। वे कहते हैं कि शिव नेत्र वास्तव में है और तुम्हें मिल सकता है। पुस्तकों में भी इसका वर्णन है।

शिवनेत्र चेतन से मिलता है

मगर शिव नेत्र को प्राप्त करना चेतन का काम है। ये शिक्षायें चेतन से प्राप्त होती हैं। यह शरीर किराये का मकान है। किराये का मकान किराये का ही है। लोग समझते हैं कि बुद्धि से हम सब समझ चुके हैं मगर मैं पूछता हूँ कि आप ने क्या पाया?

चरित्र न रहने से कुछ नहीं

अब तो चरित्र रह नहीं गया। अब क्या रामायण क्या गीता या अन्य धर्म पुस्तकें। देवियां और पुरुष सभी दुखी हैं छोटे से लेकर बड़े तक सभी दुखी। हमारे में शिथलता घर कर गई है। साधू सन्यासी दूर।

२० वर्ष पहले ऐसा नहीं था

आज के बीस वर्ष पहले न तो इतने डाक्टर थे और न मर्ज। पहले इतने रोग नहीं थे। खान पान और रोग इत्यादि तो समुन्द्र पार से आये। अब तो स्त्रियां भांग और शराब पीने लगीं। पचहत्तर फीसदी स्त्रियां शराब दिल्ली में पीने लगी। यह तो हवा वाली बात हो गई। २० वर्षों के अन्तर गत इतना पाप!

रामायण, गीता, गुरुद्वारे सभी जगह पर हैं और सभी जगह मनुष्य हैं लेकिन पाप बढ़ता ही जा रहा है। अब इनका किसी पर कोई असर ही नहीं रह गया है। देखो, जब आप को पीड़ा होती है तो डाक्टर, हकीम, वैद्य कोई हो पर दर्द दूर होने से मतलब। किसी दवा से हो पर दर्द दूर होना चाहिए। इसी प्रकार जब पाप छुड़ाना चाहते हो तो तुम्हें उसकी बात करनी चाहिये। पाप छुड़ाने वाला होगा तो पाप छुड़ा देगा।

यहां हमारा कुछ नहीं

यहां पर इस संसार में न तो बच्चे हमारे, न स्त्री हमारी। हम अपने मोह में सबको अपना अपना कहते हैं। सत्य एक है प्रेम एक है। उसे पहिचानो। उसे पहिचान लेने पर आनन्द मिलेगा। उसमें एक ताकत है। एक ज्ञान है यदि उसकी सुन्दरता जगा दी जाय तो तुम्हें बड़ी ताकत हासिल हो जाय। मैं बड़ी

Scanned with CamScanner

साफ बात बताता हूं। मरने के पहले यदि तुम शिव नेत्र खोल लो तो सारी सृष्टि दिखलाई पड़ने लगेगी। कुदरती आंख है। यह बाहर के दो नेत्र हैं। इनके पीछे तीसरा नेत्र या शिव नेत्र है। अन्दर वाले नेत्र का रास्ता अन्दर से गया है।

भगवान का पाना आसान

मैं तो यहां तक कहूंगा कि दुनियां का सामान प्राप्त करना कठिन है मगर भगवान का पाना आसान हैं। मुझे बाद में तब मालुम हुआ जब गुरु महराज ने कृपा करके रास्ता दे दिया तो मालुम हुआ कि सरल है। शुरु में बड़ा मुश्किल है। पर बाद में मालुम हुआ कि यह आसान है।

मन से एक ही काम होगा

मन से एक बार में एक ही काम होता है। एक ही काम हो सकता है दो नहीं। उससे चाहे जो काम लो। मगर एक समय में एक ही काम होगा मैं उसी का परिचय देने आया हूँ।

मूर्ति का मतलब क्या था

मूर्ति का मतलब यह था कि चरित्रवान की मूर्ति बनाया जाय। जब मूर्ति के सामने जाकर बराबर उन मूर्तियों की आंखों की तरफ देखोगे दृष्टि पुतली पर ठहर जायेगी और फिर आंखें बन्द करते ही शिव नेत्र खुल आयेगा। मूर्तियों को यह काम था। मगर अब उस उद्देश्य को भूल गये।

महात्मा गुफा में नहीं रहते

ऐसे शिव नेत्र प्राप्त महात्मा सदा संसार में रहते हैं इसके सदा हर युग में प्रमाण हैं। वे महात्मा गुफाओं में न तब रहे न अब वे सदा जीवों को चेताने तथा बताते रहे। लेकिन जब आप ने कहा कि नहीं आयेंगे तो वे चुप हो गये। और जब फिर तुम्हारी दीन अवस्था होती है तो आकर दे देते हैं।

कष्ट और आयेगा

इस संसार में जो भी कष्ट हैं यह अभी रुपये में आठ आने है। लिख लो सन् ४८ स सन् ६८ तक यानी २० वर्षों में जो तकलीफ अभी आठ आने है। वह आकर रहेगी। उसे कोई रोक नहीं सकता है। वह तो आकर रहेगी। उससे बचने का बस एक ही उपाय है। अगर अध्यात्मवाद में प्रवेश कर जांय तो बच जांय और किसी तरह से बचना मुश्किल है। भूकम्प, गोले, आग सब उसी आठ आने में है। हमको तो उस तराजू से मतलब। यह तकलीफ जो अभी तक आई यह तो कुछ भी नहीं है। आने वाली तकलीफ इससे बीस गुना होगी। अभी अगर नहीं आते हो तो मत आओ मगर दूसरी बार आने पर तो तुम्हें आना होगा।

मांस मछली मत खाओ

मानव जाति इन्सानों की जाति है। आदमी पढ़ा लिखा मगर हैवान हो गया है। मैं तो निकल पड़ा हूँ। मेरा तो यह काम है कि हिन्दुस्तान में लोग मछली, मांस. अण्डा छोड़ दें अगर नहीं छोड़ते तो देखो, ऐसी बिमारी आयेगी और नये नये रोग होंगे कि डाक्टरों के पास दवा नहीं होगी। जब चीख पड़े और कुदरत डण्डा लेकर पड़े तो क्यों नहीं तकलीफ होगी। इतिहास साक्षी है। आबादी सौ करोड़ हो जाय तो भी उचित भोजन मिलेगा। यदि अन्याय करोगे तो दस करोड़ भी आबादी रह जाय तो भी उचित भोजन न मिलेगा। इसलिये उचित खान पान हो अच्छा चरित्र हो। विचार सुन्दर हों तो हर प्रकार का सुख प्राप्त हो जायेगा।

मैं देने आया

हम क्या देने के लिए आये ? आप समझें। मैं शिवनेत्र का प्रचार करता हूँ। राजस्थान में ही

Scanned with CamScanner

केवल २० हजार होंगे। और प्रान्त आप छोड़ दें यदि आप धर्म कानून से बदल दें तो दूर की बात है। मगर प्रेम से सबके दिलों को बदल कर उन्हें समझा कर तब इस शिवनेत्र को देने आया हूं।

प्रेम से प्रभु मिलते हैं

प्रेम ही एक माध्यम है जिससे वह प्रभु मिलता है। वह प्रेम का समुन्द्र है। महात्मा प्रेम का दरिया बहा कर उस समुन्द्र में पहुंचा देते हैं। उसी प्रेम को पाकर लोग मस्त होते हैं और तब संसार से सच्ची विरक्ति होती है। प्रेम को पाकर ही लोगों ने प्रभु को पाया मैं सिद्ध कर दूँगा कि लोगों ने प्रेम से पाया। मगर जिन्होंने कुछ किया नहीं वे ही कहते हैं कि ऐसा नहीं है।

आने वालों को लाभ

ये देवियां आती हैं ये जानती हैं कि दुख दर्द सब दूर। मैं टेम्परेचर डाउन कर दूँ तो बात। लेकिन आप पहले आवें तो। दवा तरीके से दी जायेगी। अगर आप पहले से दूषित विचार बना लिये। सोचा कि महात्मा तो बदमाश होते हैं मगर यह बात नहीं। आप अपना मर्ज लेकर महात्मा के पास गये। महात्मा के किसी चमत्कार से प्रभावित होकर आप पहुंचे। अब आप तो चाहते हैं कि जो कुछ महात्मा ने एकान्त में धन कमाया हो जो ऋद्धि सिद्ध प्राप्त किये हो वह हमें दे दें। उधर वे महात्मा जो अपने ही रोगी, सुस्त काहिल। वह तुम्हारा धन हड़पना चाहते हैं। इस प्रकार दोनों एक दूसरे के निशाने पर लगे रहे। जब महात्मा आप का धन लेकर चले गए तो आप कहने लगे कि महात्मा बड़े बदमाश निकले। होना भी था ऐसा ही। इस प्रकार जब दोनों अपने-अपने स्वार्थ सिद्धि में लगे रहे तो यह धोखा हुआ और फिर यह सब हुआ। लेकिन बहुत से ऐसे हुए कि ऋद्धि सिद्धि होते हुए भी भीख नहीं मांगे। यह तो इतिहास है कि पवित्रता और श्रद्धा के ऊपर पत्थर रख दिया।

अब महात्मा ही जगा सकते हैं

सच्चे महात्मा कुछ लेते नहीं वे केवल देने आते हैं। अब यदि कोई ऐसे महात्मा ही आवें और जगायें तो जग जायेगी आत्मा। अन्यथा वैसे नहीं जगेगी। यह बेचारी जीवात्मा। दो दोनों आंखों के पीछे बैठी है। जब यह जग जायेगी। तो अन्तर के आनन्द तथा सुख का अनुभव करेगी वहां के आनन्द और बहार की हर चीजें परमात्मा ने पहले से ही वहां रख दिया है। वहां बड़े-बड़े लोक हैं। बड़े बड़े पेड़ हैं और बड़ी बिशाल रचना है। उस रचना के आगे यह सब एक छोटे से मच्छर के समान हैं।

प्राप्त करने में सरल है

यह सब अन्तर की रचना देखने के लिए कोई आंख बनाने की जरूरत नहीं। सब केवल थोड़े रगड़ की जरूरत है। जब थोड़ा सा रगड़ कर दिया जाय तो अन्तर की आंख अपने आप ठीक हो जाती है। फिर उसी से सब दिखाई पड़ने लगता है। तब उस आँख को शिवनेत्र, ज्ञान चक्षु आदि कहकर पुकारते हैं। उससे अन्तर की वह विशाल रचना साफ दिखाई पड़ती है।

अन्तर की रचना

वहां अंधेरा बिलकुल नहीं है। वहां तो प्रकाश ही प्रकाश है। जो चीज है सबसे प्रकाश निकलता रहता है। जल आदि से रोशनी अपने आप निकलती रहती है। उधर देखने पर पता चलता है चम चम चम चम चमकता रहता है। उधर बड़े बड़े महल हैं। बड़े सुन्दर सजे हुये। बड़े बड़े पेड़ हैं। वह रचना ही कुछ और है।

इस प्रकार के महात्मा जो अन्तर की रचना को दिखा सकते हैं बराबर यहां रहते हैं। वह मनुष्य शरीर के द्वारा जीवों का उद्धार

करते हैं।

पूजा ध्यान क्या है

जब तक तुम उधर का भेद न जानो उधर की रचना को न देखो, उधर का रास्ता न पा जाओ तब तक क्या समझोगे कि पूजा, ध्यान क्या है। तब तक तो तुम्हारे ख्याल से सब ऐसा ही है। सब पूजा एक जैसी है। मगर जब आंख खोल लिया शिवनेत्र महापुरुष की कृपा से पा लिया तो पूजा ध्यान सबका सही तरीका, सही मतलब सही प्रकार सही समझ में आने लगेगा। तब आंख कान नाक सब ठीक से होगा। सबका महत्व समझ में आयगा। हम हिन्दू है। हम मुसलमान हैं यह सब भावना खत्म होगी। हम सब एक इन्सान हैं यह भावना आ जयेगी। हिन्दू मुसलमान एक हैं।

उस प्रभु की रोशनी या प्रकाश हर एक के लिए एक सी है। यह अलग अलग नहीं हैं कि यह हिन्दू के लिए है या मुसलमान के लिए है। उस प्रभु को पाने का एक ही रास्ता है। एक ही रास्ता आने का है और एक ही रास्ता जाने का है।

स्वर्गवास हो गया

जब कोई मरता है तो कहते हैं कि स्वर्ग वास हो गया। यह कहना झूठ है। किसी ने देखा नहीं है कि मर कर कहां गया। और न उसने ही कोई सूचना भेज दी कि मैं यहां स्वर्ग में हूँ। जब आपकी दिव्य आंखें गुरू की कृपा से खुल जांय तो सब साफ साफ दिखाई पड़ता है। तब अपने आंख से देख कर बताओ कि मर कर वहां गया।

जीवात्मा गन्दी हो गई

यह जीवात्मा शरीर में दोनों आंखों के पीछे बैठी है। यह अनेक कर्मों के द्वारा गन्दी हो गई है। इस पर कर्मों की काई जम गई है। अब जब तक इस साफ न करियेगा तब तक इस जीवात्मा का जो अपना प्रकाश है वह प्रकट नहीं होगा। कर्मों की काई को साफ करने पर दिव्य नेत्र खुल जायेगा। तब दिव्य नेत्र के खुलने पर उस प्रकाश में सब अवगुण काम क्रोध लोभ मोह सो जाते हैं। बड़े भाग्य है जो मरने के पहिले इसे प्राप्त कर लेते हैं। ऐसे लोगों को फिर कोई संसय या सन्देह नहीं रहता है कि—

उघरहि विमल बिलोचन हिय के।
मिटहिं दोष दुख भव रजनी॥

हिय यहां है (भृकुटि के मध्य में) वह हृदय में नहीं है। यहीं पर जीवात्मा की बैठक है। उसी जगह शिव नेत्र है। उसी के पेट उघरते हैं। तब सब दोष दुख नष्ट हो जाते हैं। तब—

सूझहिं राम चरित मणि माणिक।

उधर ज्ञान सृष्टि और इधर अज्ञान सृष्टि है। उधर जब शिव नेत्र खुलते हैं तो रामचरित्र की सारी महिमा समय में आने लगती है। तब लगता है कि सारा विश्व उस प्रभु के द्वारा प्रेरित चल रहा है।

हमारा भ्रम है

जैसे हम देखते हैं कि आकाश में बादल छा गये है तो कहते हैं कि सूरज बादल में छिप गया लेकिन यह कहना हमारा भ्रम पूर्ण है। वास्तव में सूरज तो बादल में छिपा नहीं। बादलों से आगे तो सूरज अब भी अपनी रोशनी दे रहा है। मगर हम बादलों से घिर गये और सूरज की रोशनी हमारे पास नहीं आती तो कहते हैं कि बादल ने सूरज को छिपा लिया।

उसी प्रकार इस आत्मा पर पापकर्म का पर्दा है। तो आप इस भ्रम में हो गये कि भगवान नहीं है मगर जब आप इन पाप कर्म के पर्दों को हटा दें तो सारी सृष्टि का दर्शन होने लगे। उधर जो आद्या महाशक्ति है वह भी साकार है। जो उधर चलते हैं उनसे बात भी करती हैं। उसका पति परमात्मा भी साकार है। उधर जितने

Scanned with CamScanner

भी हैं सब देखे जाते हैं।

गोस्वामी जी ने लिख दिया

अमर की रचना सब दिखाई पड़ती है। जो चाहे वह देख सकता है। गोस्वामी जी ने इस मनुष्य शरीर रूपी किराये का मकान छोड़ने के पहिले ही यानी ९१ वर्ष पहले ही लिख दिया। वहां जो दृश्य दिखाई देते हैं वह कोई भी देख सकता है। लेकिन जब तक आपको कोई सच्चा महात्मा न मिला तब तक आपने ऐसी बात कहा कि सब गलत। रामायण में गोस्वामी जी ने अपनी आंखों की देखी हुई लिखा है। उनकी दिव्य आंख खुली थी वह सब देखते थे। तब उन्होंने लिखा। अगर आपकी आंख खुल जाय तो आप भी सब देखने लगें। अभी तो आप सो रहे हैं। आप जगे नहीं हैं। अगर तुम एक बार तैयार हो जाओ तो केवल एक अंगुल का पर्दा है। ज्यों तोड़ो कि तुरन्त सब दिखाई पड़ने लगे। तब तुम सच्चे माने में जिन्दा हो जाओ।

शंकराचार्य जी महराज

एक बार बम्बई में सम्मेलन हो रहा था। उसमें उन्होंने आदि शंकराचार्य का उदाहरण दिया। उन्हें अपनी शक्ति का इतना आपा आया कि शास्त्रार्थ करने निकले। सभी को हराया। काशी के उस समय के विद्वान पण्डित जी उनसे शास्त्रार्थ में हार गये तो उनकी स्त्री ने कहा कि अभी तो आप ने आधे अंग को हराया है? अब मुझे भी हरा दें तब तो आप की विजय होगी। वह लगी नारी के अनुभव पर शास्त्रार्थ करने। बेचारे शंकराचार्य जी तो ब्रह्मचारी थे वे क्या जानें उस अनुभव को हार। गये तो समय लिया और उस अनुभव को प्राप्त करने के लिए मर रहे एक क्रूर बादशाह के शरीर में अपनी आत्मा को प्रवेश किया और अपने शरीर की सुरक्षा के लिए अपने शिष्य को सहेज गये। सारे राज्य में शोर हो गया कि राजा जी उठे, राजा जी उठे।

तब इस राजा ने उस देश का सारा विधान बदल दिया। सभी जनता सुखी हो गई। सब चाहने लगे कि यह राजा बराबर रहते तो अच्छा होता। प्रजा को यह बात ज्ञात हो गई कि यह शंकराचार्य हैं जिनका शरीर गुफा में इनके शिष्य सुरक्षित रक्खे हैं। प्रजा ने सोचा कि अगर उस शरीर को नष्ट कर दिया जाय तो शंकराचार्य इसी राजा के शरीर में रह जायेंगे यह सोच कर वे उसे नष्ट करने चले।

जब यह बात शंकराचार्य को मालुम हुई कि लोग मेरे शरीर को नाश करने जा रहे हैं तो वे राजा के शरीर से फौरन अपने शरीर में प्रवेश हो गये।

कहने का मतलब है कि शक्ति प्राप्त होने पर शरीर भी बदला जा सकता है और देश का विधान भी। मगर मनुष्य शरीर परमात्मा की प्राप्ति के लिए है।

परमात्मा को प्राप्त करो

इस मनुष्य शरीर से उस परमात्मा का साक्षात्कार होता है इसे व्यर्थ न जाने दो। केवल आपा अभिमान या लोभ, मोह में नष्ट न कर दो। कहीं न कहीं वह परम पिता परमात्मा अवश्य होगा जो इस सृष्टि का सिरजन हार है। जिसने सूरज और चांद बनाये वह कोई न कोई अवश्य होगा।

आन्दोलन की जरूरत नहीं

आप क्यों आन्दोलन करते हैं? और अगर आन्दोलन करना ही है तो जन जन में आन्दोलन करिये हर व्यक्ति को परिवर्तित करने की जरूरत है। आन्दोलन से क्या लाभ कि कितनी स्त्रियों के पति मारे जांय। हमारे देश में ५० लाख साधू हैं और अब तो चार शंकराचार्य हैं। उनको चाहिये कि आदि शंकराचार्य की

Scanned with CamScanner

भांति तैयार रहें। और प्रधान मन्त्री जाने लगे तो उनके शरीर में प्रवेश होकर बदल दो देश के विधान को। तब तुम्हें न आन्दोलन करने की जरूरत न गोली खाने की जरूरत। तब आप क्यों फिर गलती करने जा रहे हैं कि आन्दोलन करके प्रधान मन्त्री बन जांय। मैं तो कहूंगा कि आन्दोलन नहीं करें। और ऐसा करूँगा तो कोई ऐसी बात नहीं। जाकर सब ठीक किया जा सकता है। कुछ न कुछ खेल का रद्दोबदल होगा।

मेरी बात तो मनुष्य के लिए

मुझे तो मनुष्य जाति की बात सब एक है। मुझे किसी खण्डन नहीं करना। मुझे किसी का आलोचना या खण्डन नहीं करना। तुम चाहे सभापति बनकर खण्डन कर चाहे जो करो पर मुझे कुछ नहीं करना।

मैंने तो उस प्रभु को पाने के लिए नमाजे भी पढ़ी, गिरजे में गये। तब यह दाढ़ी नहीं थी। उस समय देखा। चद्दर फैला दिया। नमाज पढ़ी पर कुछ नहीं। किसी ने टुकड़े फके। खाये और चल दिये।

आलोचना मत करो

अब तो हम सब हिन्दू गिर गये। कहीं धर्म की बात होती है तो धर्म के नाम पर हिन्दू आलोचना करता है। मगर मुसलमान हकीकत के बारे में चुप। मुसलमान धर्म पर आलोचना नहीं करता। अब तो देखिये कितने हिन्दू मांस मछली खाने लगे हैं। इन्हें तो हिन्दू नहीं बल्कि कसाई कहा जाय एक मुसलमान से पूछा तो कहने लगा कि महराज हिन्दू तो जोर से खा रहे हैं। हमें अब कहां खाने को मिल पाता है।

एक हरिजन से पूछा तो कहने लगा दे दिया ब्राह्मण और क्षत्रियों को। अब तो वे ही लोग खा रहे हैं। हम लोग अब नहीं खाते हैं।

एक मुसलमान की बात

पुष्कर में एक मुसलमान से पूछा तो वह कहने लगा कि भगवन मैं और मेरे बच्चे जन्म से कभी नहीं खाये। हम लोग मांस मछली नहीं खाये हैं। तो उनमें भी ऐसे हैं जो जन्म से इसे नहीं खाये पीये हैं। उसी प्रकार हिन्दू हैं जो इनसे भी ज्यादा खाने पीने वाले हैं। इसलिए हिन्दू मुसलमान से कुछ नहीं। सबमें अच्छे बुरे हैं। सबके रास्ते बदल गये।

हिन्दुओं में अनेक रास्ते

हिन्दुओं में तो अनेक रास्ते हो गये। कोई कुछ कहता है तो कोई कुछ। अरे भाई, ये मन्दिर या जमीन और मकान तुम्हें नहीं ले जायेंगे। इस आत्मा रूपी चिराग को जलाओ तो काम बनेगा। यदि यह चिराग बुझा रह गया तो इस कारागार में (शरीर रूपी कारागार में) यम पुलिस इतनी पिटाई करती है कि क्या कहा जाय। उस आंख के खुलने पर सब कुछ दिखाई देता है।

आप संसार में व्यस्त हैं

अरे भाई, तुम तो खाने पीने में, नौकरी में इतने मशगूल हो कि तुमको क्या पता इसका। शिव, मीराबाई सहजो बाई की तरह से अपनी दिव्य आंख को खोल लो तब सब वासनायें समाप्त हो जाती हैं और तब सब कुछ दिखाई पड़ने लगता है। इस मनुष्य शरीर का उद्देश्य यही है कि शिव नेत्र खोल लिया जाय जिससे उस प्रभु की अद्भुत झांकी मिले और आनन्द भी प्राप्ति हो जाय। अन्य शरीर (अन्य योनियां) तो भोग के लिये हैं। आंख खुलने के बाद फिर यह आत्मा अन्य शरीरों (योनियों) को नहीं प्राप्त करेगी। तब न सर्दी न गर्मी न बरसात लगेगी। तब तुम्हारी ऐसी दशा हो जायेगी। तब सच्चा आनन्द प्राप्त होगा।

Scanned with CamScanner

पुस्तकें नहीं समझायेंगी

ये पुस्तक अब नहीं समझायेंगी। इनके लिखने वाले लिखकर चले गये। बिना बताने वाले के ऐसे यह सब समझ में नहीं आता। जो कर्म करोगे उसका फल तुम्हें भोगना पड़ेगा। कर्मों का भुगतान इसी मृत्यु लोक में ही करना पड़ता है। यहां यदि किसी से लोगे तो देना पड़ेगा। कोई पति बन करके ले रहा है तो कोई भाई बन करके। यह लेना-देना यहीं खत्म कर दो। यह लेन देन का खाता यहीं खत्म करो। इस संसार में जो सुख प्रतीत हो रहा है वह सुबह की ठंडक की समान है आगे दोपहर को प्रचण्ड धूप है। उसमें जलना होगा।

कर्म के लिये एक उदाहरण

कर्मों को समझने के लिए एक उदाहरण है। इन सब के पीछे एक मुनिसपैलिटी की गाड़ी लगी है। यह गाड़ी हर एक के साथ लगी है। हर एक के साथ यह डायरी लेकर खड़ा रहता है। पूजा पाठ तीरथ व्रत हर प्रकार के कर्म सब कुछ उसी में डाल लिया। सब उसी में डाल लिया। मल-मूत्र, टट्टी पेशाब उसी गाड़ी में डालते गये। वह कुछ कहेगा नहीं। वह गाड़ी भरने के बाद अन्त में आप के ऊपर लाद दी जाती है। जब मर कर वहां पहुंचते हैं तो मुनीम बुलाया जाता है और आप ने जो कुछ जीवन में किया होता है वह सब रील की तरह से आप की वहां रख दी जाती है। इस प्रकार पूरे जीवन में जो कुछ भी आप कर्म करते हैं सब सामने आ जाता है। आप अपने को धोखा दे सकते हैं मगर वह अन्तरयामी है वह आप के खाते की सब बातें जान जाते हैं। इसी प्रकार वे महात्मा भी अन्तरयामी होते हैं उन महात्माओं से आप क्या छुपा सकते हैं। वे मनुष्य शरीर में हृदय स्थल की बात जानते हैं।

घाट जगाती क्या करें

ऐसे अन्तरयामी महात्मा बताते हैं कि तुम ऐसे कर्म न करो कि वह सिर का बोझ बने। जब तुम्हारे ऊपर कर्मों का बोझ न होगा तो कौन तुम्हें रोकेगा।

घाट जगाती बैठ कर सबका मोजरा लेय।
घाट जगाती क्या करे जो सिर बोझ न होय॥

मनुष्य जाति का कल्याण

इस मनुष्य जाति का कल्याण तभी सम्भव है जब अध्यात्मवाद का जन्म हो। मैं तो किसी का खण्डन करता नहीं केवल सत्य को बतलाता हूं। सत्य का निरूपण भर करता हूँ। सत्य की सुन्दरता को दर्शाता हूं। सत्य सत्य ही है। वह नित्य तथा सदा आनन्द देने वाला है।

इस शरीर से काम लो

इस शरीर में बैठे हो तो इससे काम लो। अगर इससे काम न लिया तो यह योंही बेकार चला जायेगा। लोग मनुष्य शरीर का उपयोग नहीं करते। खाते, पीते, सोते ही इसे गुजार देते हैं।

दूसरी बात यह कि देवियों से जो खराबी पैदा हो गई है उसे साफ कर दीजिये। देवियां जब धर्म पर आरूढ होंगी तब धर्म में आस्था आयेगी। हमारे ही ऐसे आदमी ब्राह्मण साधू तथा सबमें आस्था बना देंगे। समय आ रहा है। जमाना अब बदल रहा है। जमाने के साथ बदलो वर्ना काम नहीं चलेगा।

कर्म का फल अवश्य भोगना है

जो आत्मायें जो भी कुकर्म करती हैं उसका फल अवश्य भोगना पड़ेगा। उन्हें अपने कर्मानुसार चार खान और चौरासी लक्ष योनियों में भ्रमण करना पड़ता है।

गाय का महत्व

गाय का महत्व धार्मिक दृष्टि से इसलिए

Scanned with CamScanner

बहुत अधिक है कि चौरासी लक्ष योनियों में आत्मा भ्रमण करती हुई अन्त में गाय या बैल की योनि में आती है। यह चौरासी लक्ष योनियों की अन्तिम कड़ी है। इसी के बाद गाय मरने पर फिर स्त्री शरीर में आती है और बैल पुरुष शरीर में। इसी से उसे पूजते हैं तथा उसका इतना महत्व है। लेकिन जो बीच में ही उनको काट दिया तो अकाल मृत्यु की आत्मा भूत योनि में जाती है।

भूत योनि के शरीर

जब भी कोई अपनी आयु शेष रहने के पहले मारा जाता है या किसी कारण से मर जाता है तो वह अकाल मृत्यु होती है। उस अकाल मृत्यु की आत्मा भूत योनि का शरीर धारण करती है उसके उसे बड़ा कष्ट होता है। उस शरीर में पेट तो बहुत बड़ा रहता है पर मुंह बहुत छोटा होता है सूई के छेद जैसा। खाने को भी नहीं मिलता और मिलता भी है तो पेट भरता ही नहीं है क्योंकि मुंह बिलकुल छोटा रहता है।

चिड़चिड़े स्वभाव वाली सन्तान

जब इस प्रकार से असन्तुष्ट ये अकाल मृत्यु वाली आत्मायें दीवानी होकर भ्रमण करती हैं तो अपनी शेष आयु इस प्रकार व्यतीत करती हैं। अन्त में इन बच्चे बच्चियों के रूप में ये जन्म लेते है। तब इनका स्वभाव चिड़चिड़ा। टेढ़ा बोलना, टेढ़ा चलना। स्वभाव खराब। न मां की इज्जत न पिता का आज्ञा पालन। खान पान अशुद्ध अर्थात सारे दुर्गुण प्रवेश रहते हैं। फिर आप कहते हो कि महाराज क्या करें बच्चा कहने में नहीं है वह तो जवाब देता है। अरे भाई यह तो तुमने खुद ऐसा कर डाला है। तुम अपनी आदत छोड़ते नहीं हो गाय काट डाला मछली अण्डे का तो पूछना ही क्या? कोई खान पान का विचार नहीं रह गया। अब खुद ही सोचो कि सन्तान कैसे ठीक हो?

५ लाख का खान पान शुद्ध

मैं तो निकल पड़ा हूँ। यदि हिन्दुस्तान में ५ लाख का मछली, मांस, अण्डा छुड़ा दिया तो तीन वर्षों में १ करोड़ का छूट जायेगा। जब खान पान सही होगा तो दिल दिमाग स्थिर होंगे। चंचलता भागेगी तब बात भी समझ में आयेगी। तब शिव नेत्र का प्रचार भी होगा। लोग शिव नेत्र को प्राप्त भी करेंगे।

मेरा उपदेश उनके लिये

मेरा उपदेश उनके लिए नहीं है जो मन्दिर के ठेकेदार हैं। मैं तो उन्हें उपदेश देता हूँ जो शराबी, कबाबी है जो रास्ते से दूर दले गये हैं जो बेचारे समझ ही नहीं पाते कि क्या ठीक है और क्या गलत है। इस समय अनसमझता में लोग कहते हैं कि जनसंख्या बढ़ गई इससे खाने की कमी हो गई है। मगर बेचारे समझते नहीं हैं हिन्दुस्तान की जनसंख्या सौ करोड़ भी हो जाय तो भी कुछ कमी नहीं होगी। पहले यहां की जनसंख्या थी ही अधिक। इतिहास इसका साक्षी है। लेकिन उस समय देश भरा पूरा था। लोग धर्म परायण थे तो यही धरती अन्न तथा सभी चीजें उगलती थी। मगर अब वही धरती अधर्म के कारण हमें कुछ देती ही नहीं।

सदाचारी बन कर देखो

यदि शराब कबाब छुड़ा दो तो देखो। जब लोग खान पान ठीक कर लें, सदाचारी और धर्म परायण बन जांय तो देखो देश कैसा सम्पन्न सुखी हो जाय। इस समय तो परिवार नियोजन चला है। देश का काफी धन इसी में व्यय हो रहा है। आपरेशन से गर्भपात कराया जा रहा है। यह सब घोर पाप है। परिवार नियोजन से लाभ कुछ नहीं। अब तो आठ आने जो

Scanned with CamScanner

सकलीफ आ रहो है उससे तुम्हें कोई बचा नहीं सकता। दिल्ली से कोई प्राइम मिनिस्टर बचा-येगा नहीं। एक नहीं कई परिवार नियोजन कर लो। शक्तियां ऊपर को काम कर रही हैं। अब ये मन्त्री लोग कुछ भी नहीं कर सकते।

परिवर्तन महात्मा करते हैं। लोगों की भावनाओं में परिवर्तन कर दिया काम खत्म हो जाय। समय से सब काम होगा। अब तो अध्यात्मवाद ही एक मात्र बचत का रास्ता है जो इधर आ गया वही बचेगा।

"आरती"

(१)

आरति सतगुरु समरथ करऊँ। दोउ कर सीस चरन तर धरऊँ १
निरखौं निर्मल जोति तिहारी। अवर सर्वसो देहुँ बिसारी ॥२
मैं तो आदि अंत का आहूँ। अवर न दूजा जानौं नाऊँ ॥३
तुम्हरे आहुं सदा संग बासी। तुम बिनु मनुआं रहत उदासी ॥४
रह्यो अजान तुम दियो जनाई। जहां रहौ तहं बिसरिन जाई ॥५
जगजिवन दास तुम्हार कहावै। जनम जनम तुम्हरो जस गावै ॥६

(२)

आरति सतगुरु साहेब करऊँ। आपन सीस चरन तर धरऊं १
जब तुम मोहिं कां दाया कीन्हा। आई सूझि बूझि मैं चीन्हा ॥२
पास बास मैं डोलौं नाहीं। गगन मंडल रहौं सत की छाहीं ॥३
निरख नैन तें सुरति निहारौं। रवि ससि नेग रूप मनि वारो ॥४
जगजिवनदास चरन दियो माथ। साहेब समरथ करहु सनाथ ॥५

(३)

आरति गुरु गुन दोजै मोही। सुरति रहै नित चरन सनेही ॥१
निकट तें भटकि कतहुं नहि धावै। सोवत जागत ना बिसरावै ॥२
मैं सुधि बुधि तें आहौं होना। रहौं मैं चरग कृपा तें लीना ॥३
जो तम मोहिं कां जानहु दासा। निर्मल दृष्टि सत दरस प्रकासा ॥४
जगजीवन दास अपना जानो। अवगुन अघ क्रम मनहि न आनो ॥५

अमर सन्देश

सतपुरुषों के बचन और वाणी ही संसारी जीवों के लिये सदा से प्रेरणा के स्रोत रहे हैं। इस लिये अपने जीवन में नया मोड़ दीजिये। अमर सन्देश के अनमोल बचनों को पढ़ कर प्रेरणा प्राप्त कीजिये और संतों का संग ढूंढ कर सतसंग कीजिये जीवन को सत्विक, प्रेमी और मानवी बनाइये। अमर सन्देश में छपे स्वामी जी महराज के अमर सन्देश व्यक्तिगत सामाजिक, मानसिक और आत्मिक क्रांति ला रहे हैं। आप भी इसे पढ़कर समय के संग आगे बढ़िये और इष्ट मित्रों को पढ़ाइये। यह समय की पुकार है।

—० सेवा भक्ति और साधन ०—

❀ गुरु आज्ञा, चाहे सैन में हो या बैन में, पालन ही उनकी सेवा है।

❀ गुरुदेव की नीति, रीति और प्रीति का निरन्तर ध्यान रखना कहीं भी विरोध न आने देना ही भक्ति है।

❀ परमानन्द की प्राप्ति के लिये दोषों का त्याग कर अन्तः करण को पवित्र बनाकर गुरू के एक एक शब्द पर कुर्बान होना ही साधन है।

मधु संचय

❀ शिवनेत्र आज भी मिलता है।

❀ शिवनेत्र प्राप्ति का गुरू मिलना चाहिये।

❀ सच्चा गुरु मिलने पर ईश्वर प्राप्ति सरल है।

❀ ईश्वर जीते जी मिलता है इसी मनुष्य शरीर से।

❀ गुरु आज्ञा को पूरा करना ही गुरु पूजा है। अपनी शक्ति लगा देने के बाद शक्तिमान प्रभु की ओर देखना ही प्रार्थना है।

Scanned with CamScanner

जयगुरुदेव अमर सन्देश
वर्ष २१, अंक २ जुलाई १९७८

रजिस्टर्ड एल-4
Licence No. 1 Licenced to
Post without Prepayment

क्रमांक पुस्तक का नाम	मूल्य
१–साधक चिंतन निरूपण	६० पैसे
२–याद रक्खो गुरु के वचन	४० पैसे
३–प्रति दिन के विचार	६० पैसे
४–परमार्थी उपदेश	७५ पैसे
५–सन्तमत में सच्चा निर्माण	६० पैसे
६–तुलसी वाणी	६० पैसे
७–यम लोकमार्ग	५० पैसे
८–ज्ञान रश्मि	७५ पैसे
९–हम गुरु को कितना मानते हैं	७५ पैसे
१०–उपरोक्त ९ पुस्तकों की गत्ते की जिल्द	५ रू०

(नाम पता यहां है)

ग्राहक संख्या 1802

श्री .... राम प्यारे यादव

पता

—: पद्य में :—

११–प्रार्थना चेतावनी संग्रह पूरी सजिल्द ३) रू० डाक खर्च कम से कम २)। पुस्तकों का सेट तथा प्रार्थना की किताब मंगाने के लिए डाक खर्च सहित मूल्य पहले भेजें। वी० पी० भेजने का नियम नहीं है।

१२–स्वधर्म साप्ताहिक वार्षिक मूल्य १०) स्वामी जी की विचार धारा का साप्ताहिक समाचार पत्र स्वधर्म साप्ताहिक निकलता है जिसका वार्षिक मूल्य १०) तथा अर्द्ध वार्षिक मूल्य ५) इसका रूपया व्यवस्थापक स्वधर्म साप्ताहिक, २३, पाण्डेय बाजार आजमगढ़ के पते पर भेजें।

रुपया भेजने तथा पुस्तकें मंगाने का पता—
व्यवस्थापक 'अमर सन्देश'
२३, पाण्डेय बाजार आजमगढ़

स्वामी और प्रकाशक—संत तुलसी दास जी महाराज, चिरौली सन्त आश्रम, कृष्ण नगर मथुरा
मुद्रक—विश्वनाथ प्रसाद अग्रवाल के निमित्त अमर ज्योति प्रेस, आजमगढ़ में मुद्रित

Scanned with CamScanner